ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI:UPBIL04292, REG. No.: 561/2013-2014 Vol.-1, No.-1, PP-292-295, YEAR-2014

पर्यावरण के चिन्ताकर्ता वेद

❑ डॉ0 विनोद कुमार पाण्डेय

सार– *पर्यावरण शब्द से प्रायः सभी परिचित हैं। इसका मानवजीवन से गहनतम सम्बन्ध है। यदि पर्यावरण शुद्ध न हो तो जीवन हो ही नहीं सकता। विशुद्ध पर्यावरण की जीवन में परम आवश्यकता होती है। पर्यावरण शब्द परि+आङ् इन दो उपसर्गपूर्वक शब्दों से वृ संवरणे धातु से ल्युट् प्रत्यय होने पर निष्पन्न होता है। पर्यावरण का अगर नाम वातावरण होता है। संसार में जो जो पदार्थ जड़ चेतन के जीवन को आच्छादित करते हैं तथा प्रभावित करते हैं वे पदार्थ पर्यावरण शब्द से अभिहित होते हैं। भोजन वस्त्र निवासादि के जो साधन विकास के कारण हैं वे भी पर्यावरण ही हैं। पर्यावरण में अग्नि, पृथ्वी, जल, वायु आकाश आदि पञ्च महाभूतों का वन, वृक्ष, लता, औषधियों को जलचर, नभचर, सरीसृप आदि जन्तुओं का गो आदि पशुओं का रासायनिक तत्वादि पदार्थों का संग्रह होता है। पर्यावरण को पर्यावरणतत्त्ववेत्ता जैविक और भौतिक दोनों भागों में विभक्त करते हैं। जैविक पर्यावरण के अन्तर्गत समस्त जीवजगत, समस्त वृक्ष, लता वल्लरी औषधि वनस्पतियां आदि परिगणित होने में भौतिक पर्यावरण में मिट्टी जलवायु प्रकाशादि आते हैं।*

भौतिक पर्यावरण को तीन भागों में बाटा जा सकता है। प्रथमतया है भूमण्डल– इसमें मिट्टी, बालू, पर्वत, खनिज पदार्थ का ग्रहण होता है। दूसरा है– जलमण्डल– इसमें नदियों, समुद्र, तड़ाग, झरने आदि हैं तीसरा है वायुमण्डल– इसमें सारी वायुएँ, नाइट्रोजन, ऑक्सीजन, हाइड्रोजन, कार्बनडाई आक्साइड, क्रिप्टान आदि हैं।

पर्यावरण प्रदूषण के मुख्य तत्त्व – हमें इसके कारणों पर विचार कर लेना चाहिए। पर्यावरण के समस्त तत्त्व नैसर्गिकरूप से शुद्ध हैं। चेतन जीव, अपनी क्रियाओं से, कर्म से और पर्यावरणपदार्थों की, ऊर्जा का तथा अवशिष्ट पदार्थों के उत्सर्जन से नैसर्गिक सन्तुलन प्रदूषित होता है। जब वे सब प्रदूषित होते हैं वही प्रदूषण कहलाता है। मुख्य प्रदूषणों में भूमि, जल, वायु, ध्वनि, आध्यात्मिक मनन, चिन्तन, चरित्र, आदि हैं।

भूमि प्रदूषण से भूमि की उर्वरता घटती है, खाद्यान्न पोषण रहित हो जाता है। अतः ऐसे प्रदूषित अन्न से निर्बलता, कुविचार, दुर्व्यसन, आत्महत्या आदि मानसिक रोग उत्पन्न होते हैं। जल प्रदूषण से संग्रहणी, पीलिया, अतिसार, रक्ताल्पता, ज्वरादि शारीरिक बीमारियाँ प्रवर्धित होती हैं। वायु प्रदूषण जीवन का आधार प्राण संकट में पड़ जाता है। वायु प्रदूषण में जीवन कठिन हो जाता है। प्रदूषण होने पर कार्बनमोनोआक्साइड, आदि दूषित तत्त्वों से पक्षाघात, सन्निपात, टाइफाइड अल्सर कैंसर, यक्ष्मा, निमोनिया कासादि रोग विकसित होते हैं। ध्वनि शब्द रूप है। ध्वनि प्रदूषण में अनिद्रा, बधिरता, स्नायुदौर्बल्य, अस्थमा आदि श्वास रोग हो जाते हैं। मृत्यु तक हो जाती है। पृथ्वी जलवायु आदि पर्यावरण दूषित होने पर चरित्रादि अध्यात्मिक प्रदूषण पैदा होता है। चरित्र प्रदूषण में बुद्ध, मन, आचार–विचार आदि विकृत होते हैं। परिणामतः सामाजिक सौहार्द्र पारिवारिक संगठन, राष्ट्रियभावना, अध्यात्मिक चेतना आदि मृतप्राय हो जाते हैं। जीवन नारकीय हो जाता है। वर्तमान में पर्यावरण प्रदूषण के निवारण हेतु सभी ज्ञानी वैज्ञानिक प्रयत्नशील हैं। प्रदूषण निवारण में जितने भी औद्योगिक यन्त्र, धुआं उगलने वाले इन तीव्रध्वनि कारक यन्त्र,

एसोसिएट प्रोफेसर–संस्कृत विभाग, के0जी0के0 (पी0जी0) कॉलेज, मुरादाबाद (उ0प्र0), भारत

कीटनाशक पदार्थ हैं उनका कम से कम प्रयोग हो तभी प्रदूषण दूर हो सकता है। विश्वपर्यावरण दिवस, विश्वजल दिवस, विश्व वन दिवस आदि उसी के उपक्रम हैं।

वर्तमान में पर्यावरण शुद्धता हेतु सर्वप्रथम जून उन्नीस सौ बहत्तर में स्टाकहोम में अन्ताराष्ट्रियसम्मेलन के माध्यम से प्रथम प्रयास किया गया। जिसमें 119 देशों से भाग ग्रहण किया गया। उसके बाद 5 जून उन्नीस सौ अठहत्तर को यू0एन0ओ0 में पर्यावरण दिवस के रूप में प्रस्ताव पारित किया गया। तब से यह निरन्तर आयोजित किया जाता है। पर्यावरण को शुद्ध रखने हेतु वृक्ष आरोपित किए जा रहे हैं वे वृक्षारोपण प्रदूषण का सर्वोत्तम सरल उपाय है पर वह कम है।

सृष्टि के संञ्चालक सर्वज्ञ सबके रक्षक पालक परमेश्वर हैं जो कि केवल चिकित्सक ही नहीं है अपितु परम चिकित्सक हैं। पर्यावरण के संरक्षण में वेदों में बहुत से घटकों के सम्बन्ध में बताया गया है। उसमें सूर्य, अग्नि, यज्ञ, वृक्ष, वनस्पतियाँ, पर्वत, पशु कीटादि हैं वहीं पर्यावरण संरक्षकों में भूमि, जल, वायु आदि निर्दिष्ट हैं। वेदों में इसका विस्तार पूर्वक वर्णन है। वेदों में पर्यावरण के प्रति चिन्ता परिलक्षित होती है। वेदों में पर्यावरण के स्थल या परिधि प्रकार, आवरण आदि पर्यावरण के ही वाचक शब्द हैं। वेदों में पर्यावरण की बहुत अधिक चिन्ता व्यक्त की गई है। भूमि सभी की मातृस्वरूप है तभी तो वेद में इसे माता कहा गया है।

"माताभूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः"[1]

अर्थात् भूमि हमारी माता है मैं उसका पुत्र हूँ। अर्थात् वही पालिका है रक्षिता है भूमि धन, धान्य, सम्पदा देती है। युजुर्वेद में **"पृथिवी माता"।**[2]. आगे **"अव त्वं धावापृथिवी**[3] अर्थात् द्युतलोक और पृथिवी लोक में हमारी रक्षा करें। अथर्ववेद में **'भूमिष्ट्वा पातु हरितेन विश्वभृदग्नि'**[4] अर्थात् हरितवर्णो से पृथ्वीपालन करे। इसके आगे भी यजुर्वेद में उपलब्ध होता है **"पृथिवी यच्छ पृथिवी दृहे पृथिवी मां हिंसी।**[5] अर्थात् पृथिवी हमारी रक्षिता है इसे प्रदूषित न करें। तथा **प्रथिवि देव्यजन्योषध्यास्ते मूलं यामहिंसिषम्।**[6] अर्थात् पृथिवी यज्ञ की समिधा है, औषधियों का आधार है अतः उत्खनन करके उसे नष्ट नहीं करना चाहिए। वेदों में जल प्रदूषण की भी चिन्ता विस्तार पूर्वक मिलती है। जल अमृतस्वरूप तथा जीवन की औषधि है। जल में रोग नाशक तत्त्व विद्यमान रहते हैं। वेदों में शक्तिवर्धक, सर्वरोगनाशक, बलधार रसायनभूत जल का महत्व प्रतिपादित है। उसके रक्षण के लिए निर्देश भी हैं

अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तविश्वानिभेषजा..... ..... आपश्च विश्वभेषजीः।[7] तथा **आपो विश्वस्य भेषजीस्तास्त्वा मुञ्चन्तु थेतियात्।**[8] तथा **"आपो ह महयं तद् देवीर्ददन्हद्द्योतभेषजम्।**[9] अर्थात् दिव्य गुण वाले जल निश्चित रूप से चिकित्सक की भांति हैं। **यजुर्वेद में अपः पिन्वौषधीजिन्व।**[10] अर्थात् जल औषधिभूत होता है। जल अमृत रूप में औषधि स्वरूप है उत्तम वैद्य है। हृदयरोगनाशक है आनुवंशिक रोगों के लिए परमौषधि है अतः जल का संरक्षण आवश्यक है।

वायु को शुद्ध रखने हेतु वेद अत्यन्त चिन्तित दिखते हैं। जीवन का आधार वायु है। वायु अमृत की भांति प्राणतत्व देता है, वायु प्रदूषण को नष्ट करता है। वायु का वेदों में सर्वाधिक महत्व है। वायु को शुद्ध रखने हेतु निर्देश मिलता है।

"वात आ वातु भेषजं शम्भु मयोभु नो हृदे। प्रण आयूषि तारिषत्।[11]

बहुत स्थलों पर वायु संरक्षण के संदर्भ पर मन्त्र प्राप्त होते हैं **यददो वात ते मृतस्य निधिर्हितः। ततो नो देहि जीवसे।**[12]

वायु की सुरक्षा हेतु अत्यन्त जागरूकतापूर्वक महत्व प्रदर्शित किया गया है। **"युचं वायो सविता च भुवनानि रक्षथस्तौ नो मुञ्चतमंहस।**[13] अर्थात् हे वायु समस्त प्राणियों की सुरक्षा में अपना योगदान करें। अथर्ववेद में **"वातः पर्जन्य आदग्निस्ते क्रव्यादमशीशयन्।"**[14]

आजकल ध्वनि प्रदूषण बहुत बढ़ गया है वेदों में ध्वनि ही मानव जीवन को व्यवहार के लिए प्रेरित करती है । श्रोवं ते शुन्धामि।15 अर्थात् श्रोवेन्द्रिय

त्रेन्द्रिय के हानिकारक तत्व ध्वनि प्रदूषण का निवारण करता है। यजुर्वेद में ध्वनिप्रदूषण से बचने हेतु मन्त्र प्राप्त होते है – **द्यां मां लेखीरन्तरिक्षं मा हिंसीः पृथिव्या सम्भव।**[16]

यजुर्वेद में ही अन्तरिक्ष को ध्वनिप्रदूषण से मुक्त रखने हेतु मन्त्र आए हैं। **अन्तरिक्षं दृंहान्तरिक्षं मा हिंसी।**[17] अर्थात् निष्कर्ष यह है ध्वनि के द्वारा अन्तरिक्ष भी प्रदूषित होता है अन्तरिक्ष प्रदूषित होने से अनिद्रा, बहरापन, कैंसर आदि बीमारियां बढ़ती रहती हैं।

चारित्रिक प्रदूषण तथा उसके दूर करने के उपाय– चरित्र पर्यावरण की चिन्ता भी वेदों की रही है संसार में चरित्र ही सबसे बड़ा धन होता है। चरित्र के नष्ट होने पर सारा सुख नष्ट हो जाता है। चरित्र के संघटक बुद्धि, मन आचार–विचार आदि होते हैं। वेदों में चरित्र रक्षा के अनेक उपदेश दिए गये हैं। यथा– **धियो यो नः प्रचोदयात्।**

18 यजुर्वेद में तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।[19] अर्थात् मन ही समग्र कार्यों का आधार है। सभी शुभ और अशुभ कार्यों का विचार मन ही करता है। इसीलिए परमात्मा से प्रार्थना की गई है कि मन शिव सङ्कल्पी हो। युजुर्वेद में एक स्थल पर एक मंत्र में आचार को शुद्धि के लिए उपदेश दिए गये हैं। **इदमहमनृतात्यत्यमुपैमि।**[20] अर्थात् मैं मनुष्य हूँ अर्थात् सन्मार्ग द्वारा सत्याचरण को धारण करूँ। पर्यावरण संरक्षण में वृक्षों का महत्वपूर्ण स्थान है। वृक्ष जीवन के लिए जीवन शक्ति प्रदान करते हैं प्रदूषण का नाश करते है। पर्यावरण का संरक्षण करते हैं। वेदों में वृक्षों का वैशिष्ट्य बहुलता से वर्णित है–

"यस्यां वृक्षा वनस्पत्या, ध्रुवास्तिष्ठन्ति विश्वहा। पृथिवी विश्वधायसं धृतामच्छावदामसि।।[21] इस मंत्र में पृथिवी के साथ वृक्षों के संरक्षण का संकेत मिलता है। अथर्ववेद में ऐसे ही वर्णन मिलते हैं।

वीरुधो वैश्वदेवीरूपाः पुरुषो जीविनः।[22] **मयो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः।**[23] **वनानां पतये नमः।**[24] **वृक्षाणां पतये नमः**[25] **औषधीनां पतये नमः**[26] **नमो वन्याय च।**[27] बहुत से मंत्रों में वृक्षों और औषधियों के संरक्षण का सङ्केत मिलता है। वृक्षों को आरोपित करने हेतु ऋग्वेद आदेश देता है। **वनस्पतिं वन अस्थापयध्वं नि षू दधिध्वमवनन्त उत्सत्।**[28]

तात्पर्य यह है कि वृक्षाऔषधियां कार्बनडाईऑक्साइड जैसे जहरीली विष को दूर करती है संसार का पर्यावरण शुद्ध करते हैं। वेद में सूर्य का पर्यावरण शुद्धता हेतु महत्व प्रदर्शित किया गया है–

उद्यन्नदित्यः क्रिमीन्हन्तु निम्रोचन्हन्तु रश्मिभिः ये अन्त क्रिमयो गवि।[29]

वेदों में यहॉ को पर्यावरण में सुरक्षा हेतु वर्णन प्राप्त होता है। यज्ञ पर्यावरण का प्रमुख साधन है घृत सोमादि हवि अग्नि में जलने से ऊष्मा पैदा होती है। यज्ञ वायु के रूप में अन्तरिक्ष को शुद्ध करता है अग्नि वायु के संयोग से शीतकरण होता है और जलवृष्टि होने लगती है। तभी अन्न पैदा होता है यजुर्वेद में स्पष्ट कहा गया–

मरुतां पृषतीर्गच्छ दशा पृश्निर्भूत्वा दिवं गच्छ ततो नो वृष्टिमावह।[30]

अन्तरिक्ष में ओजोन परत का अत्यधिक महत्व है। **ओजोन का स्तर तस्योत जायमानस्योल्व आसीद्धिरण्यायः कस्मै देवाय हविषा विधेय।**[31] इस प्रकार निश्चित है कि वेदों में पर्यावरणविषयक चिन्तन मनन बहुत अधिक किया गया है। ईश्वर ने वेदों में सृष्टि के आदि में पर्यावरण का पूर्ण चिन्तन किया है। **अग्नेयं यज्ञमध्वरं विश्वपरिभूरसि।**[32]

समासतः कहा जा सकता है कि वेदों ने ही सर्वप्रथम पर्यावरण संरक्षण के सन्दर्भ में विस्तार चिन्ता प्रकट की है तथा उसे शुद्ध करने हेतु सरल सुगम उपाय भी निर्दिष्ट किए हैं जिन्हें अपनाकर मानव जीवन सुखी आनन्दमय हो सकता है।।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अथर्ववेद
2. यजुर्वेद– 2.10
3. " – 2.9
4. अथर्ववेद– 2.28.5
5. यजुर्वेद– 13.18

6. यजुर्वेद– 1.25
7. ऋग्वेद– 1.23.20
8. अथर्ववेद– 3.7.5
9. अथर्ववेदः– 6.24.1
10. यजुर्वेद– 14.8
11. ऋग्वेद– 10.186.1
12. ऋग्वेद– 10.186.3
13. अथर्ववेद–1.25.3
14. अथर्ववेद– 3.21.10
15. यजुर्वेद– 6.14
16. यजुर्वेद– 5.43
17. यजुर्वेद–14.12
18. यजुर्वेद– 36.3
19. यजुर्वेद–34.1.6
20. अथर्ववेद– 12.1.27
21. अथर्ववेद– 8.7.4
22. यजुर्वेद– 16.17
23. यजुर्वेद– 16.17
24. यजुर्वेद– 16.18
25. यजुर्वेद– 16.19
26. यजुर्वेद– 16.19
27. यजुर्वेद– 16.34
28. ऋग्वेद– 16.101.11
29. अथर्ववेद– 2.32
30. यजुर्वेद– 2.16
31. अथर्ववेद– 4.2.8
32. ऋग्वेद– 1.1.4